संत ने खोल कर रखे ब्रह्माकुमारीज़ के सारे राज़

तपस्या के लिए माउण्ट आबू उपयुक्त स्थान

यदि छोटे बच्चे के कोमल हृदय में श्रेष्ठ संस्कार के बीज बो दिये जायें और उसे परवरिश देकर, पालना कर पोषित करें तो वे दूसरों के आदर्श बन जाते हैं। इसीलिए परमात्मा ने छोटी बालिकाओं को अपने साथ ले वास्तविक संस्कारों से सिंचित कर परिवर्तन की आधारशिला के निमित्त बनाया।

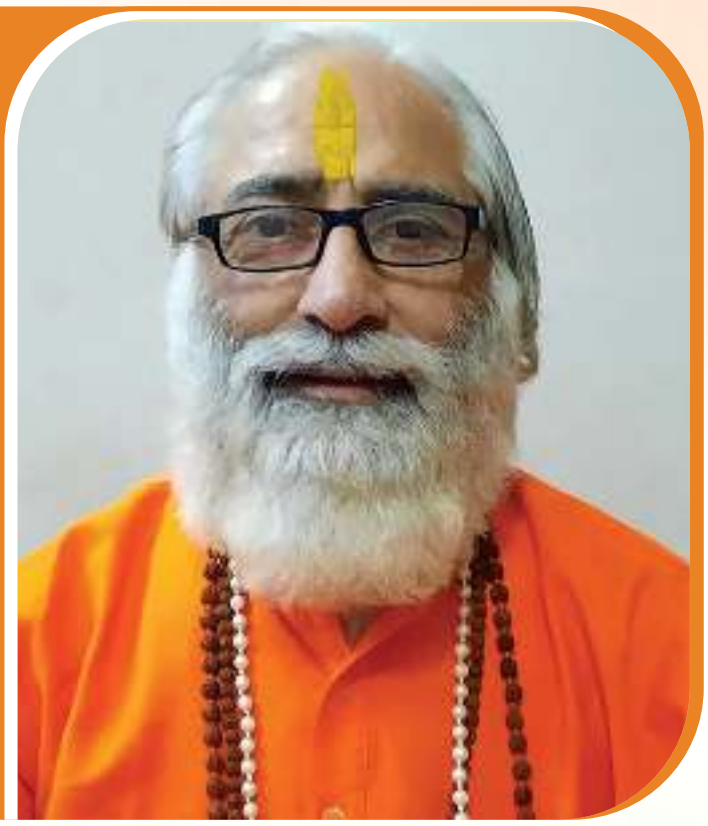

- गतांक से आगे...

रिपोर्टर : मेरा सवाल आपसे यह है कि महाराज जी दादा लेखराज कृपलानी ने माउण्ट आबू को क्यों चुना? और उन्होंने इस मिशन के लिए कुंवारी लड़कियों को अपने साथ क्यों लिया?

संतः दादा लेखराज कृपलानी को जब साक्षात्कार हो गया परमात्मा का तो सारा अंधकार मिट गया, अज्ञान समाप्त हो गया, भीतर से इनके घृणा समाप्त हो गई, प्रेम की लहरें बहने लगीं। इन्होंने माउण्ट आबू को इसलिए चुना क्योंकि माउण्ट आबू पहले भी एक तपोस्थली रही है। जितने भी आपने देखा होगा हमारे भारतवर्ष में माताओं के स्थल हैं। चाहे वो माता वैष्णो देवी का है, या नैना देवी का है, किसी भी देवी का स्थल हो या कोई भी तीर्थ स्थल हो वो अधिकतर आपको पहाड़ों पर ही मिलते हैं। और माउण्ट आबू में तो बहुत सारे तपस्वियों ने, ऋषियों ने तप किया हुआ है। जैनियों का सबसे बड़ा तीर्थ, सबसे बड़ा मन्दिर वहाँ पर है। वहाँ जाकर देखें आप। उसकी नक्काशी देखें। इन्होंने भी वहाँ जाकर तप किया। क्योंकि तपस्वियों की भूमि में तपस्वी ही तप कर सकता है। तो इन्होंने वहाँ जाकर तप किया। आचरण शुद्ध था ही। जो छोटी बालिकाएं साथ में इनके गई थी, उनके अंदर इन्होंने देखा कि वे एक शक्ति है, नारी शक्ति है। क्योंकि बेसिक शक्ति जो है वो है भगवती, मां दुर्गा की शक्ति। नारी शक्ति माँ दुर्गा का प्रतीक। हमारे यहाँ भी तो माना जाता है, पूजा की जाती है नारियों की। तो इन्होंने देखा कि नारी को ही अगर हम आगे बढ़ायें, नारी को ही आगे रखें तो वह दूसरों के भीतर एक माँ के रूप में, एक बहन के रूप में, स्वयं स-चरित्र बनकर दूसरों के भीतर उनके चरित्र का निर्माण कर सकती है। तो चरित्र निर्माण सबसे पहला कार्य इन्होंने करना शुरू किया। और कैसे किया जाए? तो उन्होंने एक विद्यालय की स्थापना की। उसको नाम दिया ईश्वरीय विश्व विद्यालय, आध्यात्मिक विश्व विद्यालय। तो धीरे-धीरे, करते-करते इसलिए इन्होंने नारियों को अपने साथ लिया, नारी शक्ति को अपने साथ लिया और वह सारी दादियां बिल्कुल, आपने कुंवारी शब्द यूज़ किया है। हां वह कुंवारी हैं... कुमारी हैं वो।

रिपोर्टरः कुंवारी रहती हैं या उनकी शादी भी होती है?

संतः हां, शादी होती है, दो तरह की शादी होती है। एक होती शारीरिक जिसे बोलते लौकिक शादी होना। और एक होता है आध्यात्मिक तौर पर शादी हो जाना, किसी को अपना मान लेना। यहां ब्रह्माकुमारीज़ भी शादी करती हैं, मैं आपको बता दूं। लेकिन वे सिर्फ भगवान शिव के साथ करती हैं। आध्यात्मिक स्तर को ऊंचा उठाने के लिए करती हैं। यूं ही नहीं शादी कर लेती कि आओ संतान पैदा करें। उसके लिए शादियां नहीं होती हैं। इसीलिए यह कहा गया कि हम ईश्वरीय संताने हैं, उस परमपिता परमात्मा के बच्चे हैं। बच्चे हैं तो आपस में फिर भाई-बहन का रिश्ता इससे पवित्र रिश्ता तो मेरे ख्याल से कोई हो नहीं सकता।

दिल्ली-नरेला। पवन यादव,डिप्टी कमिश्नर,नगर निगम,नरेला ज़ोन को राखी बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. गीता बहन तथा अन्य।

आज़मगढ़-उ.प्र.। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक हेमराज मीणा को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. रंजना बहन। साथ हैं ब्र.कु. रीना बहन तथा अन्य।

झुंझुनू-राज.। जिला कलेक्टर चिन्मयी गोपाल को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. अमृत दीदी, ब्र.कु. साक्षी बहन, ब्र.कु. परमेश्वर भाई, ब्र.कु. विवेक भाई, ब्र.कु. सुरेन्द्र भाई व अन्य।

छपरा-बिहार। जिला अधिकारी अमन समीर को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. अनामिका बहन। साथ हैं ब्र.कु. वीणा बहन और ब्र.कु. प्रियांशु बहन।

दिल्ली-करोल बाग(पांडव भवन)। सुप्रीम कोर्ट दिल्ली के माननीय न्यायमूर्ति एस.वी. भट्टी को ईश्वरीय रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् प्रसाद भेंट करते हुए ब्र.कु. रेनू बहन। साथ हैं ब्र.कु. अनुष बहन।

झुंझुनू-राज.। जेल अधीक्षक प्रमोद सिंह को ईश्वरीय रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. साक्षी बहन। साथ हैं ब्र.कु. शिवानी बहन, परवीन भाई एवं ब्र.कु. जयराम भाई।